International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 04-05-2026, Accepted: 04-06-2026, Published: 19-06-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 309-312

भारतीय स्थापत्य कला का ऐतिहासिक विकास प्राचीन से मध्यकालीन परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

नरेन्द्र कुमार[1], यूसुफ अली[2]
[1] शोधार्थी, महाराजा सूरजमल बृज विश्वविधालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत
[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, महात्मा ज्योति राव फुले विश्वविधालय, जयपुर, राजस्थान, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhssr.2026.12.2.12216

सारांश
भारतीय स्थापत्य कला विष्व की सबसे प्राचीन एवं समृद्ध सांस्कृतिक विरासतों में से एक है, जो भारतीय सभ्यता के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा तकनीकी विकास का सजीव प्रमाण प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत शोध आलेख में प्राचीन काल से मध्यकाल तक भारतीय स्थापत्य कला के ऐतिहासिक विकास का क्रमबद्ध अध्ययन किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न कालखंडों में विकसित स्थापत्य शैलियों, उनकी विशेषताओं तथा उन पर प्रभाव डालने वाले सांस्कृतिक एवं राजनीतिक कारकों का विश्लेषण करना है।
शोध में सिंधु घाटी सभ्यता की सुव्यवस्थित नगर योजना से प्रारम्भ करते हुए मौर्यकालीन स्तंभों एवं स्तूपों, बौद्ध गुफा स्थापत्य, गुप्तकालीन मंदिर वास्तुकला तथा मध्यकालीन हिंदू, इस्लामी और मुगल स्थापत्य परंपराओं का विवेचन किया गया है। सिंधु सभ्यता की उन्नत जल–निकासी प्रणाली, अशोक स्तंभों की शिल्पकला, साँची स्तूप, अजंता–एलोरा गुफाएँ, गुप्तकालीन मंदिर, खजुराहो एवं कोणार्क जैसे हिंदू मंदिर तथा ताजमहल, लाल किला और फतेहपुर सीकरी जैसी मुगलकालीन संरचनाएँ भारतीय स्थापत्य की विविधता और उत्कृष्टता को प्रदर्शित करती हैं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय स्थापत्य कला केवल निर्माण तकनीक का परिणाम नहीं, बल्कि धार्मिक विष्वासों, सांस्कृतिक मूल्यों, कलात्मक अभिरुचियों तथा शासकीय संरक्षण का समन्वित स्वरूप है।
लेख में स्थापत्य कला के सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व, राजनीतिक शक्ति के प्रदर्शन में इसकी भूमिका तथा ऐतिहासिक स्रोत के रूप में इसकी उपयोगिता का भी विश्लेषण किया गया है। साथ ही, प्राकृतिक क्षरण, शहरीकरण और बढ़ते पर्यटन जैसी समकालीन चुनौतियों के संदर्भ में धरोहर संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया गया है। निष्कर्षतः यह अध्ययन दर्शाता है कि भारतीय स्थापत्य कला विविध सांस्कृतिक परंपराओं के समन्वय, राष्ट्रीय पहचान के निर्माण तथा सांस्कृतिक निरंतरता की महत्वपूर्ण आधारशिला रही है। अतः इन स्थापत्य धरोहरों का संरक्षण न केवल सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए, बल्कि भावी पीढ़ियों को ऐतिहासिक चेतना से जोड़ने के लिए भी अत्यंत आवश्यक है।

मूल शब्द: भारतीय स्थापत्य कला, सिंधु सभ्यता, मंदिर वास्तुकला, इस्लामी स्थापत्य, मुगल स्थापत्य, सांस्कृतिक विरासत, धरोहर संरक्षण

प्रस्तावना
स्थापत्य कला मानव सभ्यता की सबसे प्राचीन और समृद्ध अभिव्यक्तियों में से एक है। यह केवल भवन–निर्माण की कला नहीं, अपितु किसी भी समाज की सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक आस्था, राजनीतिक शक्ति एवं तकनीकी उन्नति का ठोस प्रमाण है। भारतीय स्थापत्य कला की परंपरा अत्यंत प्राचीन एवं विविधताओं से परिपूर्ण है। सिंधु घाटी की सुनियोजित नगर–संरचनाओं से लेकर मुगलकालीन भव्य इमारतों तक, भारत ने विष्व को स्थापत्य की अनेकानेक अनमोल धरोहरें प्रदान की हैं।
स्थापत्य कला को अंग्रेजी में 'Architecture' कहा जाता है, जो ग्रीक शब्द 'Arkhitekton' से व्युत्पन्न है अर्थात् 'मुख्य शिल्पकार'। भारतीय परंपरा में इसे 'वास्तुविद्या' या 'शिल्पशास्त्र' के रूप में जाना जाता है। वास्तुशास्त्र एक ऐसा प्राचीन भारतीय विज्ञान है जो भवन निर्माण, नगर नियोजन एवं पर्यावरण के परस्पर संबंध को व्यवस्थित ढंग से परिभाषित करता है।
इतिहास लेखन के संदर्भ में स्थापत्य कला का महत्व अत्यंत विशिष्ट है। जब लिखित स्रोत अपर्याप्त होते हैं, तब भवन, मंदिर, स्तूप और किले ही इतिहासकारों को तत्कालीन समाज, अर्थव्यवस्था और राजनीति को समझने का माध्यम बनते हैं। भारतीय स्थापत्य कला का विधिवत अध्ययन न केवल सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की दृष्टि से, अपितु राष्ट्रीय पहचान के निर्माण की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।
प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य भारतीय स्थापत्य कला के ऐतिहासिक विकास का क्रमबद्ध अध्ययन करना है प्राचीन सिंधु सभ्यता से प्रारंभ होकर मध्यकाल की मुगलकालीन वास्तुकला तक। इस अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि विभिन्न कालखंडों में स्थापत्य शैलियाँ किस प्रकार विकसित हुईं, उन पर धार्मिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक कारकों का क्या प्रभाव पड़ा, और ये धरोहरें आज भी भारतीय पहचान का आधार किस प्रकार बनी हुई हैं।

प्रमुख शब्द: स्थापत्य कला, प्राचीन इतिहास, मध्यकालीन इतिहास, भारतीय इतिहास, भारतीय संस्कृति

स्थापत्य कला की अवधारणा
स्थापत्य कला तीन मूलभूत तत्वों पर आधारित होती है संरचना (Structure), सौंदर्य (Aesthetics) और उपयोगिता (Utility)। रोमन वास्तुविद् विट्रुवियस ने इन्हें 'Firmitas, Venustas, Utilitas' कहा था, जो क्रमशः दृढ़ता, सौंदर्य और उपयोगिता के प्रतीक हैं।

1. रचना (Structure)
किसी भी भवन की दीर्घकालिक स्थायित्व–क्षमता उसकी संरचनात्मक दृढ़ता पर निर्भर करती है। प्राचीन भारतीय शिल्पकारों ने पत्थर, ईंट, चूना और काष्ठ का कुशल उपयोग करते हुए ऐसी इमारतें खड़ी कीं जो सहस्राब्दियों बाद भी अपनी आभा बनाए हुए हैं। अशोक के स्तंभ हों या मोहनजोदड़ो की नालियाँ सभी में उन्नत अभियांत्रिकी का प्रमाण मिलता है।

2. सौंदर्य (Aesthetics)
भारतीय वास्तुकला में सौंदर्य का एक विशेष आध्यात्मिक आयाम है। मंदिरों और गुफाओं में उत्कीर्ण मूर्तिकला, कमल–पुष्पों के

अलंकरण, ज्यामितीय पैटर्न और पौराणिक आख्यानों के भित्तिचित्र ये सभी स्थापत्य के सौंदर्यशास्त्र के अभिन्न अंग हैं। भारतीय स्थापत्य में 'रस' और श्भावश की अवधारणा भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

3. उपयोगिता (Utility)

प्रत्येक भवन का एक विशिष्ट प्रयोजन होता है धार्मिक उपासना, प्रशासन, आवास अथवा व्यापार। भारतीय स्थापत्य में मंदिर केवल पूजास्थल नहीं, अपितु सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन के केंद्र थे। किले केवल सुरक्षा नहीं, वरन् शासन और न्याय के भी केंद्र थे। स्थापत्य कला और संस्कृति का संबंध अत्यंत गहरा और द्विपक्षीय है। एक ओर संस्कृति, धर्म और राजनीति स्थापत्य शैली को प्रभावित करते हैं, वहीं दूसरी ओर भव्य भवन सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक बन जाते हैं। ताजमहल मुगलकालीन संस्कृति का प्रतीक है, तो बृहदेष्वर मंदिर चोल साम्राज्य की शक्ति और भक्ति का।

प्राचीन भारत में स्थापत्य कला

1. सिंधु सभ्यता की नगर योजना

भारतीय स्थापत्य कला का इतिहास लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व सिंधु घाटी सभ्यता ; 2600–1900 ईसा पूर्वद्ध से प्रारंभ होता है। यह विष्व की सबसे प्राचीन नगरीय सभ्यताओं में से एक थी, जिसमें नगर नियोजन का स्तर उस युग के लिए अत्यंत उन्नत था।

मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा इन दोनों नगरों की खुदाई ने विष्व को चकित कर दिया। इन नगरों में ग्रिड पैटर्न पर आधारित सड़कें थीं जो एक–दूसरे को समकोण पर काटती थीं। भवन पक्की ईंटों से निर्मित थे। सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी सुव्यवस्थित भूमिगत जल–निकासी प्रणाली। मोहनजोदड़ो में 'वृहत् स्नानागार' (Great Bath) की खोज ने यह सिद्ध किया कि इस सभ्यता में सार्वजनिक स्वच्छता की विकसित अवधारणा थी। इसी नगर में अनाज भंडारण के लिए विशाल 'धान्यागार' (Granary) भी मिला है, जो नगर प्रशासन की कुशलता का प्रमाण है। हड़प्पा में भी दो टीलों पर स्थित नगर मिले एक नागरिक क्षेत्र और दूसरा दुर्ग क्षेत्र। इस विभाजन से स्पष्ट होता है कि सामाजिक संगठन और नगर प्रशासन का एक सुनिश्चित ढाँचा विद्यमान था।

2. मौर्यकालीन स्थापत्य

मौर्य साम्राज्य ;322–185 ईसा पूर्वद्ध के काल में भारतीय स्थापत्य ने एक नई ऊँचाई प्राप्त की। सम्राट अशोक के शासनकाल में स्थापत्य कला राजकीय संरक्षण में फली–फूली। यूनानी राजदूत मेगस्थनीज ने मौर्यकालीन राजधानी पाटलिपुत्र की भव्यता का वर्णन किया है।

अशोक स्तंभ एवं स्तूप

सम्राट अशोक ने भारत के विभिन्न भागों में धर्मादेश उत्कीर्ण करने के लिए ऊँचे पाषाण स्तंभ खड़े करवाए। सारनाथ का अशोक स्तंभ इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इन स्तंभों पर शीर्ष पर पशु–आकृतियाँ ;सिंह, घोड़ा, बैलद्ध बनाई गई हैं, जो अत्यंत उत्कृष्ट शिल्पकारिता का नमूना हैं। सारनाथ के स्तंभ के चार सिंहों पर आधारित 'सिंह–शीर्ष' आज भारत का राष्ट्रीय चिह्न है। अशोक ने स्तूपों का भी निर्माण करवाया। स्तूप बौद्ध धर्म में बुद्ध के अवशेषों पर निर्मित अर्धगोलाकार संरचना होती है। साँची का स्तूप इनमें सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

3. बौद्ध स्थापत्य

साँची स्तूप

मध्य प्रदेश में स्थित साँची का महास्तूप बौद्ध स्थापत्य का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। इसका मूल निर्माण अशोक के काल में हुआ था, परंतु बाद के शतकों में इसका विस्तार किया गया। साँची स्तूप में चारों दिशाओं में सुंदर तोरण–द्वार (Torana) हैं, जिन पर जातक कथाओं और बुद्ध के जीवन से संबंधित घटनाओं का उत्कृष्ट उत्कीर्णन है। ये तोरण–द्वार भारतीय मूर्तिकला की उत्कर्ष–अवस्था के प्रतीक हैं।

अजंता–एलोरा गुफाएँ

महाराष्ट्र में औरंगाबाद के निकट स्थित अजंता और एलोरा की गुफाएँ भारतीय स्थापत्य एवं कला का अद्भुत संगम हैं। अजंता में 30 गुफाएँ हैं जो बौद्ध धर्म से संबंधित हैं और जिनमें विष्वप्रसिद्ध भित्तिचित्र उकेरे गए हैं। ये भित्तिचित्र दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से सातवीं शताब्दी ईस्वी तक की अवधि में निर्मित हुए। एलोरा में 34 गुफाएँ हैं जिनमें बौद्ध, हिंदू और जैन तीनों धर्मों की गुफाएँ हैं। यहाँ का कैलाश मंदिर (Cave 16) विशेष रूप से उल्लेखनीय है यह एकाश्म (monolithic) शैली में पहाड़ को ऊपर से नीचे काटकर बनाया गया विशाल मंदिर है, जो भारतीय शिल्पकारों की अपूर्व कुशलता का प्रमाण है।

गुप्तकालीन स्थापत्य कला

गुप्त काल ;320–550 ईस्वीद्ध को भारतीय इतिहास का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है। इस काल में कला, साहित्य, विज्ञान और दर्शन सभी क्षेत्रों में असाधारण प्रगति हुई। स्थापत्य कला के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण योगदान था शैलकृत (rock–cut) शैली से मुक्त संरचनात्मक (structural) मंदिरों का निर्माण।

1. मंदिर स्थापत्य का विकास

गुप्तकाल से पूर्व भारत में अधिकतर धार्मिक संरचनाएँ शैलकृत ;पहाड़ काटकर बनाई गईद्ध थीं। गुप्त काल में पत्थर और ईंट से निर्मित स्वतंत्र मंदिरों का निर्माण प्रारंभ हुआ। इन मंदिरों में एक गर्भगृह (Sanctum Sanctorum) होता था, उसके ऊपर एक छोटा शिखर था, और चारों ओर एक प्रदक्षिणा पथ (circumambulatory passage)। देवगढ़ का दशावतार मंदिर ;उत्तर प्रदेशद्ध, तिगवा का विष्णु मंदिर और भूमरा का शिव मंदिर इस काल के प्रतिनिधि उदाहरण हैं।

2. नागर शैली की विशेषताएँ

गुप्तकाल में नागर स्थापत्य शैली का विकास हुआ, जो मुख्यतः उत्तर भारत में प्रचलित थी। इस शैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं शिखर (curvilinear tower) जो ऊँचाई की ओर संकरा होता जाता है, अमलक (amalaka) शिखर के शीर्ष पर स्थित रिब्ड पाषाण–चकरी, कलश जो सबसे ऊपर होता है, और विमान जो गर्भगृह के ऊपर का बहुमंजिला भाग है। इस शैली का पूर्ण विकास बाद के काल में हुआ, जिसे खजुराहो और कोणार्क के मंदिरों में देखा जा सकता है।

मध्यकालीन स्थापत्य कला

1. हिंदू स्थापत्य

खजुराहो मंदिर समूह

मध्य प्रदेश के खजुराहो में स्थित मंदिर समूह ;950–1050 ईस्वीद्ध चंदेल राजवंश की अनुपम देन है। यहाँ मूलतः 85 मंदिर थे, जिनमें से आज लगभग 20 ही शेष हैं। ये मंदिर हिंदू, बौद्ध और जैन तीनों धर्मों से संबंधित हैं। खजुराहो के मंदिरों में बाहरी दीवारों पर मूर्तिकला विष्वप्रसिद्ध है। कुछ इतिहासकारों का मत है कि ये मूर्तियाँ तांत्रिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करती हैं, जबकि अन्य इन्हें जीवन के विभिन्न पहलुओं का समग्र चित्रण मानते हैं। कंदरिया महादेव मंदिर खजुराहो का सर्वश्रेष्ठ और विशालतम मंदिर है इसकी ऊँचाई लगभग 30 मीटर है।

कोणार्क सूर्य मंदिर

ओडिशा के कोणार्क में स्थित सूर्य मंदिर ;13वीं शताब्दीद्ध गंग वंश के राजा नरसिम्हदेव प्रथम द्वारा निर्मित करवाया गया था।

यह मंदिर एक विशाल रथ के रूप में निर्मित है 24 विशाल चक्रों पर सात घोड़े इसे खींचते प्रतीत होते हैं। इस रचना में सूर्य देवता के रथ की कल्पना को स्थापत्य में मूर्त रूप दिया गया है। इस मंदिर की नक्काशी अत्यंत सूक्ष्म और विविधतापूर्ण है। इसे 'Black Pagoda' भी कहा जाता था क्योंकि इसकी काली पत्थर की मीनार नाविकों को दिखाई देती थी।

द्रविड़ एवं नागर शैली

दक्षिण भारत में द्रविड़ स्थापत्य शैली विकसित हुई, जो नागर शैली से भिन्न है। द्रविड़ शैली की विशेषता है गोपुरम ;विशाल प्रवेश–द्वारद्ध, विमान जो पिरामिडनुमा होता है, मंडपम ;स्तंभयुक्त हॉलद्ध और पुष्करणी ;मंदिर–तालाबद्ध। तंजावुर का बृहदेष्वर मंदिर ;1010 ईस्वीद्ध चोल राजा राजराज प्रथम द्वारा निर्मित एक उत्कृष्ट द्रविड़ शैली का उदाहरण है। इसका विमान 66 मीटर ऊँचा है और यह एकाश्म ग्रेनाइट प्रस्तर से बना है।

2. इस्लामी स्थापत्य

12वीं शताब्दी में तुर्क आक्रमणकारियों के आगमन के साथ भारत में एक नई स्थापत्य परंपरा का प्रारंभ हुआ। इस्लामी स्थापत्य में तीन तत्व केंद्रीय महत्व रखते हैं मेहराब (Arch), गुम्बद (Dome) और मीनार (Minaret)।

मेहराब, गुम्बद एवं मीनार

मेहराब एक अर्धवृत्ताकार या नुकीली धनुषाकार संरचना है जो भार वहन करने में सक्षम होती है। गुम्बद गोलार्धाकार छत की संरचना है जो इस्लामी वास्तुकला का प्रतीक बन गई। मीनार एक ऊँचा स्तंभनुमा बुर्ज है जिससे अजान ;नमाज का आह्वानद्ध दी जाती है। दिल्ली की कुतुब मीनार ;72.5 मीटरद्ध इस्लामी स्थापत्य का प्रारंभिक भारतीय उदाहरण है, जिसे कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1193 ईस्वी में प्रारंभ करवाया था।

दिल्ली सल्तनत की स्थापत्य परंपरा

दिल्ली सल्तनत ;1206–1526 ईस्वीद्ध के काल में भारतीय और इस्लामी स्थापत्य शैलियों का एक रोचक मिश्रण हुआ। गुलाम वंश, खिलजी, तुगलक, सैयद और लोदी इन पाँच वंशों ने दिल्ली में अनेक मस्जिदें, मकबरे, महल और किले बनवाए। इस काल में 'इंडो–इस्लामिक' स्थापत्य शैली का उदय हुआ जिसमें भारतीय शिल्पकारों ने इस्लामी प्रारूपों को भारतीय कारीगरी से संयुक्त किया। इल्तुतमिश का मकबरा, अलाई दरवाजा, तुगलकाबाद किला इस परंपरा के प्रमुख उदाहरण हैं।

3. मुगल स्थापत्य

मुगल साम्राज्य ;1526–1857 ईस्वीद्ध के काल में भारतीय स्थापत्य अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचा। मुगलों ने फारसी, तुर्की और भारतीय स्थापत्य परंपराओं का एक अद्भुत समन्वय किया। सफेद संगमरमर, पीट्रा ड्यूरा ;पत्थर में जड़ाई कार्यद्ध, उद्यान–वास्तुकला और पर्यावरण के साथ सामंजस्य ये मुगल स्थापत्य की विशेषताएँ हैं।

ताजमहल

आगरा में यमुना नदी के तट पर स्थित ताजमहल ;1632–1653 ईस्वीद्ध सम्राट शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज महल की स्मृति में बनवाया था। यह संसार के सात आश्चर्यों में से एक है और यूनेस्को विष्व विरासत स्थल है। श्वेत संगमरमर से निर्मित इस स्मारक में फारसी, इस्लामी और भारतीय स्थापत्य का अनुपम सम्मिश्रण है। ताजमहल की सममिति (symmetry) और चारबाग ;चार भागों में विभाजित उद्यानद्ध इसकी विशेषताएँ हैं। इसके निर्माण में लगभग 20,000 कारीगर और 22 वर्ष लगे थे।

लाल किला

दिल्ली में यमुना के किनारे स्थित लाल किला ;1639–1648 ईस्वीद्ध भी शाहजहाँ का निर्माण है। लाल बलुआ पत्थर (Red Sandstone) से बनी इसकी विशाल प्राचीरें इसे 'लाल किला' नाम देती हैं। इसमें दीवान–ए–आम (Public Audience Hall), दीवान–ए–खास (Private Audience Hall), मोती मस्जिद और रंगमहल जैसी अनेक संरचनाएँ हैं। यहाँ स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं।

फतेहपुर सीकरी

आगरा से लगभग 40 किलोमीटर दूर स्थित फतेहपुर सीकरी ;1571–1585 ईस्वीद्ध अकबर द्वारा निर्मित एक नई राजधानी थी। यह नगर लाल बलुआ पत्थर से बना है। यहाँ जामा मस्जिद, बुलंद दरवाजा, दीवान–ए–आम, दीवान–ए–खास, पंचमहल और बीरबल के महल प्रमुख संरचनाएँ हैं। बुलंद दरवाजा ;54 मीटरद्ध विष्व के सबसे बड़े प्रवेश–द्वारों में से एक है। फतेहपुर सीकरी हिंदू, जैन और इस्लामी स्थापत्य का एक अनोखा मिश्रण है, जो अकबर की धार्मिक समन्वय की नीति का प्रतीक भी है।

स्थापत्य कला का सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व

1. धार्मिक जीवन पर प्रभाव

भारतीय स्थापत्य कला और धर्म का संबंध अटूट रहा है। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे और चर्च ये सभी केवल पूजास्थल नहीं, अपितु समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन के केंद्र रहे हैं। बड़े मंदिर परिसर शिक्षा, चिकित्सा और दान के केंद्र थे। मंदिर की स्थापत्य शैली ब्रह्मांड–विज्ञान (cosmology) को भी प्रतिबिंबित करती थी गर्भगृह सूर्य या ब्रह्म का प्रतीक माना जाता था।

2. राजनीतिक शक्ति का प्रदर्शन

शासकों ने सदा भव्य निर्माणों के माध्यम से अपनी शक्ति और वैभव का प्रदर्शन किया। अशोक के स्तंभ, मौर्य राजप्रसाद, गुप्तकालीन मंदिर, मुगल किले और महल ये सभी राज–सत्ता के प्रतीक थे। स्थापत्य कला एक प्रकार की 'शक्ति–भाषा' (language of power) थी जो जनमानस पर राज–सत्ता की अदृश्य छाप छोड़ती थी।

3. कला एवं संस्कृति का संरक्षण

स्थापत्य संरचनाएँ अपने युग के कला, शिल्प, विज्ञान और दर्शन की जीवंत अभिलेखागार होती हैं। अजंता के भित्तिचित्र तत्कालीन वेशभूषा, आभूषण, संगीत और नाट्य का ज्ञान देते हैं। खजुराहो की मूर्तियाँ मध्यकालीन भारतीय समाज के विविध पहलुओं का चित्रण करती हैं। इस प्रकार, स्थापत्य धरोहरें इतिहासकारों, समाजशास्त्रियों और सांस्कृतिक अध्येताओं के लिए अमूल्य स्रोत हैं।

स्थापत्य कला के संरक्षण की चुनौतियाँ

भारतीय स्थापत्य धरोहरें आज अनेक गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही हैं।

1. प्राकृतिक क्षरण

वर्षा, आर्द्रता, तापमान–परिवर्तन और वायु प्रदूषण के कारण पाषाण एवं चूना–आधारित संरचनाएँ धीरे–धीरे क्षतिग्रस्त हो रही हैं। अम्लीय वर्षा (Acid Rain) विशेष रूप से संगमरमर और चूना पत्थर की संरचनाओं के लिए अत्यंत हानिकारक है। ताजमहल का पीलापन इसी का परिणाम है।

2. शहरीकरण

तीव्र शहरीकरण के कारण ऐतिहासिक स्थलों के आसपास अनियोजित निर्माण हो रहे हैं। भूमिगत जल–दोहन के कारण भूमि धँसाव की समस्या बढ़ रही है, जिससे प्राचीन संरचनाओं की नींव को खतरा है। आगरा में यमुना नदी के सूखते प्रवाह से ताजमहल की लकड़ी की नींव को खतरा बताया जाता है।

3. पर्यटन का प्रभाव

पर्यटन एक ओर धरोहर संरक्षण के लिए राजस्व उत्पन्न करता है, वहीं दूसरी ओर अत्यधिक पर्यटक–संख्या से संरचनाओं पर दबाव पड़ता है। स्पर्श, नमी और वाहन–प्रदूषण इमारतों को नुकसान पहुँचाते हैं।

4. संरक्षण के सरकारी प्रयास

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) देश भर में 3,600 से अधिक स्मारकों की देखरेख करता है। भारत में 42 यूनेस्को विष्व विरासत स्थल हैं। श्राष्ट्रीय संस्कृति निधिश और 'संस्कृति मंत्रालय ' धरोहर संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हाल ही में 'हेरिटेज सिटी डेवलपमेंट एंड ऑगमेंटेशन योजना' (HRIDAY) के अंतर्गत ऐतिहासिक नगरों के संरक्षण और विकास पर बल दिया जा रहा है।

निष्कर्ष

भारतीय स्थापत्य कला का इतिहास मानव सभ्यता की एक असाधारण यात्रा है सिंधु घाटी की सुनियोजित नगर–संरचना से लेकर मुगलकालीन ताजमहल की अलौकिक भव्यता तक। इस यात्रा में हिंदू, बौद्ध, जैन और इस्लामी सभी परंपराओं ने अपनी–अपनी छाप छोड़ी है।

भारतीय स्थापत्य की सबसे बड़ी विशेषता इसकी 'समन्वय–क्षमता' है। यहाँ विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएँ एक–दूसरे से प्रेरणा लेती रही हैं, संघर्ष नहीं करती रही हैं। नागर और द्रविड़ शैलियों का समन्वय, हिंदू और इस्लामी शैलियों का मिश्रण यह श्गंगा–जमुनी तहज़ीबश स्थापत्य में भी परिलक्षित होती है।

सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में स्थापत्य धरोहरों का अतुलनीय योगदान है। ताजमहल, लाल किला, साँची स्तूप और अजंता गुफाएँ ये केवल ईंट–पत्थर के ढाँचे नहीं, अपितु भारतीयता की आत्मा के प्रतीक हैं। भारत के पासपोर्ट पर अशोक चक्र, करेंसी नोटों पर ताजमहल और संसद भवन पर अशोक की लाट ये इस बात के प्रमाण हैं कि स्थापत्य धरोहरें राष्ट्रीय अस्मिता का अभिन्न अंग हैं।

भविष्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है इन अमूल्य धरोहरों का वैज्ञानिक संरक्षण। इसके लिए तकनीकी विशेषज्ञता, पर्याप्त वित्त–पोषण, जन–जागरूकता और नीतिगत दृढ़ता सभी की आवश्यकता है। यदि हम अपनी स्थापत्य विरासत को सुरक्षित रख सके, तो हम आने वाली पीढ़ियों को वह अमूल्य उपहार दे सकेंगे जो हमारे पूर्वजों ने हमें दिया था।

संदर्भ सूचि

1. Brown, Percy. (1942). Indian Architecture (Buddhist and Hindu Period). Bombay: D.B. Taraporevala Sons & Co.
2. Craven, Roy C. (1976). A Concise History of Indian Art. London: Thames and Hudson.
3. Fergusson, James. (1910). History of Indian and Eastern Architecture. London: John Murray.
4. Harle, J.C. (1994). The Art and Architecture of the Indian Subcontinent. New Haven: Yale University Press.
5. Huntington, Susan L. (1985). The Art of Ancient India: Buddhist, Hindu, Jain. New York: Weatherhill.
6. Kramrisch, Stella. (1946). The Hindu Temple (2 Vols.). Calcutta: University of Calcutta Press.
7. Michell, George. (1977). The Hindu Temple: An Introduction to Its Meaning and Forms. London: Paul Elek.
8. Nath, R. (1982). History of Mughal Architecture. New Delhi: Abhinav Publications.
9. Piggott, Stuart. (1950). Prehistoric India to 1000 B.C. London: Cassell.
10. Rowland, Benjamin. (1953). The Art and Architecture of India. London: Penguin Books.
11. Sharma, R.S. (2005). Ancient India. New Delhi: NCERT.
12. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI). (2023). Archaeological Survey of India Official Reports. New Delhi: Ministry of Culture.
13. यूनेस्को विष्व विरासत केंद्र. (2024). World Heritage List India. Paris: UNESCO.